भारत - बुर्किना फासो संबंध

भारत और बुर्किना फासो के बीच द्विपक्षीय संबंध सौहार्दपूर्ण हैं। द्विपक्षीय गतिविधियां मार्च, 1976 में उस समय शुरू हुई जब बुर्किना फासो के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के नेतृत्व में एक आधिकारिक शिष्टमंडल ने भारत का दौरा किया तथा आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग के लिए एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया। तब से बुर्किना फासो की ओर से भारत की उच्च स्तर पर अनेक यात्राएं हुई हैं जिसमें नाम शिखर बैठक में भाग लेने के लिए 1983 में बुर्किना फासो के राष्ट्रपति स्वगीर्य कैप्टन थॉमस संकारा की यात्रा तथा 1989 में विदेश संबंध एवं सहयोग मंत्री की यात्रा शामिल है।

भारत की ओर से विदेश राज्य मंत्री ने वर्ष 1987 में बुर्किना फासो का दौरा किया। मई – जून, 1993 में द्विपक्षीय संबंधों में उस समय तेजी आई जब राष्ट्रपति ब्लैसे कैंपोर ने भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान भारत और बुर्किना फासो ने दोनों देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक संयुक्त आयोग का गठन करने का निर्णय लिया। भारत ने बुर्किना फासो के आर्थिक विकास में, विशेष रूप से कृषि, हथकरघा, खनन, सिंचाई, लघु उद्योग आदि जैसे क्षेत्रों में बुर्किना फासो की मदद करने का प्रस्ताव किया।

जुलाई 1994 में राष्ट्रपति कोम्पोर की दिल्ली की दो दिवसीय ट्रांजिट यात्रा के दौरान भारत ने कृषि क्षेत्र में बुर्किना फासो को 250 मिलियन की सहायता प्रदान की जिसमें एकीकृत कृषि परियोजना के तहत कृषि सहायता का एक पैकेज शामिल है। इस पैकेज के तहत अनेक साजो-सामान सहित 200 ट्रैक्टर तथा बीज, औजार, वाटर पंप आदि प्रदान किए गए। दोनों देशों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं तकनीकी सहयोग पर संयुक्त आयोग का गठन अक्टूबर, 1994 में एक करार पर हस्ताक्षर के बाद किया गया। राष्ट्रपति कैंपोर 1997 में भारत के दौरे पर पुन: आए।

नई दिल्ली में भारत – अफ्रीका मंच शिखर बैठक में भाग लेने के लिए अप्रैल, 2008 में पूर्व प्रधानमंत्री तर्टियस जोंगो ने भारत का दौरा किया। उन्होंने प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह से मुलाकात की तथा आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा की। उनकी यात्रा से दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों को और गति मिली।

स्वास्थ्य मंत्री श्री लेने सेबगो के नेतृत्व में बुर्किना फासो के शिष्टमंडल ने मार्च, 2013 में नई दिल्ली में आयोजित नवीं सी आई आई – एक्जिम बैंक गोष्ठी में भाग लिया। आवास एवं शहरीकरण मंत्री श्री यकूबा बैरी, कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री श्री महामा जौंगराना तथा डिजीटल अर्थव्यवस्था एवं डाक विकास मंत्री श्री जीन कौलीडियाटी इस शिष्टमंडल का हिस्सा थे।

बुर्किना फासो के एक आधिकारिक शिष्टमंडल जिसमें कृषि एवं खाद्य सुरक्षा मंत्री, खान एवं ऊर्जा मंत्री तथा खान एवं ऊर्जा मंत्रालय के महानिदेशक के अलावा अन्य लोग भी शामिल थे, ने मार्च, 2014 में नई दिल्ली में आयोजित 10वीं सी आई आई – एक्जिम बैंक गोष्ठी में भाग लिया। विदेश मंत्री श्री मोउसा बेडिलाजोन नेबी के नेतृत्व में बुर्किना फासो से एक लघु शिष्टमंडल ने आई ए एफ एस 3 में भाग लिया। श्री नेबी ने 28 अक्टूबर 2015 को विदेश मंत्री से मुलाकात की।

भारत की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने 2 से 4 नवंबर, 1995 के दौरान औगाडावगौव का दौरा किया। प्रधानमंत्री के स्तर पर भारत की ओर से बुर्किना फासो की यह पहली यात्रा बहुत सफल थी। प्रधानमंत्री ने बुर्किना फासो के राष्ट्रपति से मुलाकात की तथा संसद को भी संबोधित किया। प्रधानमंत्री को बुर्किना फासो के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से नवाजा गया। इस यात्रा से अनेक क्षेत्रों में अधिक गहन बातचीत का मार्ग प्रशस्त हुआ।

प्रधानमंत्री ने कोटे डिआइवरी में निवास के साथ नए भारतीय दूतावास का उद्घाटन किया। भारतीय मिशन जुलाई, 2002 में बंद हो गया था।

आई ए एफ एस 3 शिखर बैठक के लिए बुर्किना फासो के राष्ट्रपति को निमंत्रण देने के लिए प्रधानमंत्री के विदेश दूत के रूप में कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कुंडारिया ने 9 और 10 जुलाई 2015 को बुर्किना फासो का दौरा किया। उन्होंने इस यात्रा के दौरान अंतरिम राष्ट्रपति श्री माइकल कफांडो से मुलाकात की।

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग में अपर सचिव श्री अरविंद कौशल के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय भारतीय शिष्टमंडल ने आई ए एफ एस निर्णयों के तहत बुर्किना फासो में जल एवं मृदा ऊतक परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना के सिलसिले में दिसंबर, 2013 में बुर्किना फासो का दौरा किया।

बुर्किना फासो का दूतावास 1996 में नई दिल्ली में खुला तथा वर्ष 2011 में इसे राजदूत के स्तर पर ऊपर उठाया गया।

वाणिज्यिक संबंध :

एक भारतीय किसान परियोजना, जिसे 1999 में बुर्किना फासो में तीन साल के लिए शुरू किया गया था, 2002 में पूरी हो गई। इस परियोजना के तहत, भारत ने बुर्किना फासो के किसानों को धान की खेती करने के लिए भारतीय किसानों की पद्धतियों, जिसमें कृषि के प्रयोजनों के लिए तैयार किए गए हैंड टूल्स, ट्रैक्टर आदि का प्रयोग शामिल है, को प्रदर्शित करने तथा इस प्रौद्योगिकी, संबंधित उपभोज्य इनपुट जैसे कि बीज, उर्वरक, कीटनाशक आदि में स्थानीय किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेषज्ञ किसानों की आपूर्ति की थी। परियोजना के पूरा हो जाने के बाद, बुर्किना फासो सरकार को कृषि मशीनरी, उपकरण, वाहन तथा अन्य आवश्यक सहायता दान में दी गई।

बुर्किना फासो भारत सरकार की टीम-9 पहल तथा अखिल अफ्रीकी ई-नेटवर्क परियोजना के तहत पश्चिम अफ्रीका के 9 देशों में एक के रूप में शामिल था। भारत सरकार ने कृषि परियोजनाओं के लिए तथा बुर्किना फासो में राष्ट्रीय डाकघर के निर्माण / सुसज्जीकरण के लिए टीम-9 परियोजना के तहत 30.97 मिलियन अमरीकी डालर की ऋण सहायता प्रदान की। वर्ष 2008 में ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए, वर्ष 2010 में एक टमाटर प्रसंस्करण कारखाना लगाने के लिए, सार्वजनिक आवास परियोजना के लिए तथा विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा की अन्य संस्थाओं के लिए 135 बसों की आपूर्ति करने, दो कार्यशालाओं का निर्माण करने, कवर्ड पार्किंग लॉट का निर्माण करने, अतिरिक्त पुर्जों आदि को अधिप्राप्त करने के लिए वर्ष 2012 की पहली छमाही में भी ऋण सहायता अनुमोदित की गई।

भारत ने बुर्किना फासो में दो परियोजनाएं स्थापित करने का प्रस्ताव किया है अर्थात व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र / इंक्यूबेसन केंद्र (वी टी सी / आई सी), बेयरफुट कॉलेज एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र तथा आई ए एफ एस के निर्णयों (I एवं II) के तहत एक मृदा एवं जल ऊतक परीक्षण प्रयोगशाला। राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एन एस आई सी) के एक दो सदस्यीय शिष्टमंडल ने बुर्किना फासो में वी टी सी / आई सी की स्थापना के लिए युवा, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार मंत्रालय (एम वाई वी टी ई), बुर्किना फासो सरकार तथा राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम के बीच करार पर हस्ताक्षर करने के लिए अक्टूबर, 2013 में औगाडॉगाव का दौरा किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सचिव के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय शिष्टमंडल ने चर्चा के लिए तथा मृदा एवं जल ऊतक परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना के सिलसिले में स्थल का निरीक्षण करने के लिए दिसंबर, 2013 में बुर्किना फासो का दौरा किया। बेयरफुट कालेज ने बुर्किना फासो में अब तक दो कार्यशालाओं का आयोजन किया है तथा कथित रूप में बेयरफुट कालेज के डा. बुंकर राय ने अप्रैल 2015 में बुर्किना फासो का दौरा किया था।

बुर्किना फासो से तीन प्रतिभागियों ने आई ए एफ एस – II के तहत कार्यान्वित कपास – तकनीकी सहायता कार्यक्रम (टी ए पी) के तहत दिसंबर, 2012 में आई एल एंड एफ एस क्लस्टर विकास पहल द्वारा आयोजित नीति-निर्माता गोष्ठी में भाग लेने के लिए भारत का पांच दिवसीय ज्ञानार्जन दौरा किया। फसल पश्चात प्रबंधन तथा फसल अवशिष्ट पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए जनवरी, 2013 में पांच व्यक्तियों के एक दूसरे समूह ने भारत का दौरा किया। आई एल एंड एफ एस क्लस्टर डवलपमेंट इनीसिएटिव, नोएडा के एक दो सदस्यीय शिष्टमंडल ने अफ्रीका के लिए कॉटन – टी ए पी के तहत बुर्किना फासो में कपास क्षेत्र के हितधारकों के साथ चर्चा के लिए नवंबर, 2013 में बुर्किना फासो का दौरा किया।

हाल के वर्षों में भारत और बुर्किना फासो के बीच कारोबारी अंत:क्रिया ने गति पकड़ी है। बुर्किना फासो ने मार्च 2008 में नई दिल्ली में भारत - अफ्रीका साझेदारी गोष्ठी में भाग लिया था। यह नई दिल्ली में मार्च 2009 में सी आई आई गोष्ठी में साझेदार देश था। भारत – बुर्किना फासो संयुक्त आयोग की बैठक मार्च, 2009 में नई दिल्ली में हुई। जून 2010 में सी आई आई द्वारा प्रायोजित एक 22 सदस्यीय कारोबारी शिष्टमंडल ने बुर्किना फासो का दौरा किया तथा फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री (फिक्की) के एक अन्य 19 सदस्यीय बहुक्षेत्रक शिष्टमंडल ने 10 से 14 अप्रैल 2013 के दौरान बुर्किना फासो का दौरा किया। अधिकारी स्तर पर विभिन्न बैठकों के अलावा शिष्टमंडल ने एक बिजिनेस फोरम तथा एक क्रेता दर क्रेता (बी 2 बी) बैठक में भाग लिया।

भारत सरकार ने 2008 में भयंकर बाढ़ से प्रभावित लोगों की मदद के लिए बुर्किना फासो को दवाओं का एक कंसाइनमेंट भेजा था। सितंबर, 2009 में बाढ़ राहत सहायता के लिए भारत के योगदान के रूप में बुर्किना फासो को 213,356 अमरीकी डालर की राशि का एक और दान किया गया।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2014-15 में 264.40 मिलियन अमरीकी डालर तथा 2013-14 में 119.76 मिलियन अमरीकी डालर था। 2013-14 में भारत से निर्यात का मूल्य 103.21 मिलियन अमरीकी डालर था जिसमें 2014-15 में लगभग 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा यह 112.76 मिलियन अमरीकी डालर हो गया। बुर्किना फासो से आयात में भी असाधारण वृद्धि हुई तथा यह 2013-14 में 16.55 मिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 2014-15 में 151.64 मिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया तथा गोल्ड एवं कॉटन के आयात में मुख्य रूप से वृद्धि हुई।

भारत की ओर से बुर्किना फासो को जिन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है उनमें मुख्य रूप से भेषज उत्पाद, वाहन एवं उनके पुर्जे, लोहा एवं इस्पात तथा उनसे निर्मित वस्तुएं, मशीनरी एवं यांत्रिक उपस्कर, रबर तथा उसकी वस्तुएं शामिल हैं। बुर्किना फासो से मुख्य रूप से गोल्ड और कॉटन का आयात होता है।

भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) कार्यक्रम :

भारत ने भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आई टी ई सी) कार्यक्रम के माध्यम से बुर्किना फासो के मानव संसाधन विकास में बुर्किना फासो को तकनीकी सहायता प्रदान की है। बुर्किना फासो ने 2013-14 के दौरान 22 आई टी ई सी स्लाटों का उपयोग किया तथा 2014-15 के दौरान इसने 26 स्लाटों का उपयोग किया। वित्त वर्ष 2014-15 के लिए आईटीईसी के 30 स्लॉटों का आवंटन किया गया है। भारत में अनुसंधान कार्य करने के लिए जून से दिसंबर, 2013 के दौरान बुर्किना फासो के पांच वैज्ञानिकों को सी वी रमन फेलोशिप प्रदान की गई।

संस्कृति :

21 जून 2015 को बुर्किना फासो में सफलतापूर्वक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। आई सी सी आर ने इस कार्यक्रम के लिए बुर्किना फासो में एक योग शिक्षक को प्रतिनियुक्त किया था, जिसमें लघु प्रवासी अंतर्राष्ट्रीय समुदाय तथा स्थानीय भारतीय समुदाय से काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

राजस्थान से 8 सदस्यीय सांस्कृतिक नृत्य मंडली (सपेरा) ने 12 से 15 सितंबर 2015 के दौरान बुर्किना फासो का दौरा किया। इस यात्रा को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित किया गया था। अकरा में भारतीय समुदाय की मदद से अकरा स्थित भारतीय उच्चायोग द्वारा औगाडोगू में दो परफार्मेंस का आयोजन किया गया जिसमें काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया तथा इसकी खूब सराहना की गई।

भारतीय समुदाय :

बुर्किना फासो में भारतीय समुदाय 200-300 के आसपास है। इनमें से कुछ विनिर्माण एवं व्यापार के कारोबार में तथा रेस्टोरेंट चलाने में लगे हैं, जबकि बाकी के लोग उनके कर्मचारी हैं। कुछ लोग कॉटन एवं गोल्ड में कारोबार भी कर रहे हैं।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय उच्चायोग, एकरावेबसाइट::
http://www.indiahc-ghana.com/ भारतीय उच्चायोग, एकरा फेसबुक पृष्ठ:
https://www.facebook.com/pages/High-Commission-of-India-Accra-Ghana/

***

फरवरी, 2016